View metadata, citation and similar papers at core.ac.uk
brought to you by CORE
provided by CMFRI Digital Repository

4

टूटिकोरिन जिले की मोलस्कन संपदाएं

कविता एम., आइ. जगदीश, मनोजकुमार पी.पी., पद्मनाथन जे.,
सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र, टूटिकोरिन, तमिल नाडु

विश्व के विभिन्न भागों की विविध मात्स्यिकी संपदाओं में मोलस्क बड़ी मात्रा में प्राकृतिक संपदा के रूप में उपस्थित हैं. ये विश्व भर में खाद्य, अलंकरण, चूना एवं औषध के लिए विदोहित किये जा रहे हैं. भारत के विविध आकृतिमान ग्रुपों में निहित मोलस्कों की शक्यता है जो तटवर्ती जल, खाड़ियों, पश्चजल एवं नदीमुख में वितरित हैं. फाइलम मोलस्क के सात वर्गों में बैवालविया, जठरपादों एवं शीर्षपादों में वाणिज्यिक रूप से प्रमुख प्रजातियां निहित हैं. वर्तमान में, भारतीय जल से 1,50,000 टन शीर्षपादों, 1,00,000 टन द्विकपाटियों एवं 20,000 टन जठरपादों को विदोहित किया जाता है (मोहम्मद एवं वेंकटेशन 2017). भारत में मोलस्क का मात्स्यिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि ये पोषक खाद्य प्रदान करने के साथ साथ तटीय मछुआरों को हिमीकृत सेफालोपोड, सीपी मांस के निर्यात के विकास के साथ अपनी आय दुगुनी करने में सहायता देते हैं और औद्योगिक आवश्यकताओं के लिए मोलस्कन कवचों का उपयोग किया जाता है. मन्नार का टूटिकोरिन तट तमिलनाडु राज्य के प्रमुख मात्स्यिकी विदोहित केन्द्रों में एक है. टूटिकोरिन तट की तटीय रेखा 163.5 कि. मी. है. टूटिकोरिन में, विदोहित मात्स्यिकी संपदाओं में मोलस्कन संपदा की प्रधानता है और ग्रुपों में प्रमुख, शीर्षपाद है जिसके बाद जठरपाद एवं सीपियां हैं.

शीर्षपाद

टूटिकोरिन जिले में निर्यात की भारी मांग के कारण शीर्षपादों जिसमें स्क्विड, कटलफिश एवं ऑक्टोपस निहित हैं, मुख्य एवं बहुमूल्य संपदा के रूप में उभरें हैं. टूटिकोरिन जिले से शीर्षपादों की औसत वार्षिक पकड़ 3,217 टन (2012-16). शीर्षपाद पकड़ का मुख्य भाग टूटिकोरिन मत्स्यन पोताश्रय से है जो आनायकों द्वारा विदोहन से है. इसके बाद वल्लम / एफ आर पी नावों में काँटा एवं डोरी द्वारा शीर्षपाद विदोहन होता है. टूटिकोरिन जिले की कुल शीर्षपाद पकड़ में 63% पकड़ का योगदान यंत्रीकृत आनाय जालों से है, 30% पकड़ काँटा एवं डोरी से, 5% पकड़ आउटबोर्ड गिल नेटों द्वारा है तथा बाकि 2% पकड़ मत्स्यन गिअरों का योगदान हैं.

टूटिकोरिन में शीर्षपाद पकड़ के मुख्य भाग में कटल फिश (51%) का सर्वाधिक योगदान है जिसके बाद स्क्विड (43%) एवं ओक्टोपस (6%) है. आनाय जाल द्वारा अवतरित मुख्य शीर्षपद प्रजातियां *युरोट्यूतिस* (*फोटोलोलिगो*) *सिंगहालेन्सिस, यु.* (*पी*) *डुवासेली, सेफिया फरोनिस, सेफिया रामानी सेफियोट्यूतिस लेस्सोनियाना* एवं *सेफिया प्रभाहारी*. विरल रूप से अन्य प्रजातियां जैसे कि *सेफिया प्रशाडी, आम्फियोकटोपस एजिना, आम्फियोकटोपस नेग्लेकट्स* एवं *ओक्टोपस* एस पी. पकड़ी गयीं. शीर्षपाद मात्स्यिकी में काँटा एवं डोरी द्वारा मुख्यतः एस. फाराओनिस (64%) इसके बाद *एस. लेस्सोनियाना* (26%) एवं *ओ. सैनिया* (10%) जैसी तीन प्रजातियां पकड़ी गयीं. विदोहित स्क्विड एवं कटल फिश आकार के आधार पर तीन ग्रेडों में बेची जा रहीं हैं. मछुआरे से बिचौलियों तक I, II, III ग्रेडों का मूल्य 300 से 400, 200 से 280 एवं 100 से 150 है.

जठरपाद

टूटिकोरिन तट के मोलस्कन विदोहन में शीर्षपाद के बाद प्रमुख संपदा जठरपाद है. समुद्री जठरपाद संपदा अनेक आवश्यकताओं के लिए विदोहित की जाती हैं लेकिन समुद्री मात्स्यिकी संपदाओं में कम घटक होने के कारण इसे ठीक तरह से पहचाना नहीं जा सका. अनेक प्रजातियों को गहने, कलाकृतियां एवं वाणिज्यिक मूल्य वाले अन्य विविध उत्पादों के लिए विदोहित किया जाता है. दक्षिण भारत के वाणिज्यिक शेल क्राफ्ट व्यवसाय में शीर्षपादों का प्रमुख स्थान है. अनेक लोगों के लिए अलंकारी शीर्षपाद व्यवसायिक आय प्रदान करता है. टूटिकोरिन जिले के कायलपट्टिनम और कलावासल केन्द्रों में शीर्षपादों को विदोहित किया जाता है और कलावासल भारत के दक्षिण-पश्चिम तट का प्रमुख शीर्षपाद अवतरण केंद्र है. इस क्षेत्र के मछुआरे द्वारा दो प्रकार का शंख मत्स्यन किया जाता है. इसमें पहला स्किन डाइविंग द्वारा *टरबिनेल्ला पैरम, कैकोरस रामोसस* एवं *लाम्बिस लाम्बिस* जैसे जीवित जठरपादों का विदोहन है. कलावासल में जीवित जठरपादों की औसत वार्षिक पकड़ 161 टन थी. ज्यादात्तर पकड़ *लाम्बिस* का है जिसके बाद *सी. रामोसस* एवं *टी. पैरम* है. दूसरा कलावासल के प्रमुख मात्स्यिकी जीवाश्म *टी. पैराम* का विदोहन है. डाइविंग से जीवाश्म शंख का विदोहन किया जाता है. आठ वर्ष पहले मछुआरों ने जठरपादों का विदोहन शुरू किया था और आज साल भर में लाखों शंख प्रदान करने के कारण मुख्य संपदा के रूप में उभरा है. 2012-16 के दौरान औसत वार्षिक विदोहन 261 टन था. जठरपाद विदोहन का मुख्य केंद्र कायलपत्तिनम है और पवित्र शंख *टरबिनेल्ला पैरम* और *चैकोरियस रामोसस* को तल सेट गिल नेटों / चैंक नेटों के द्वारा विदोहित किया जा रहा है. इस केंद्र का वार्षिक जठरपाद उत्पादन का औसत 80 टन था (2012-16). *टी. पैरम* 45% और *सी. रामोसस* 55% पायी गयीं. पश्चिम बंगाल में *टी. पैरम* को कंगन बनाने के लिए विदोहित किया जाता है और अन्य जठरपाद दीवार की सजावट, कुंजी श्रृंखला एवं अन्य सजावटी वस्तुएं बनाने के लिए उपयोग किया जाता है.

द्विकपाटी

भारत के पश्च जल एवं नदीमुखों में पायी जाने वाली विविध प्रजातियों की सीपियों को मांस एवं कवचों के लिए विदोहित किया जाता है. भारत के कई लोगों के लिए द्विकपाटियां (सीपियां एवं शुक्तियां) आजीविका प्रदान करते हैं. टूटिकोरिन जिले में सीमित मात्रा में द्विकपाटी संपदा उपलब्ध है. टूटिकोरिन तट पर द्विकपाटियों में केवल सीपियों को विदोहित किया जा रहा है. जीवित शुक्तियों का विदोहन टूटिकोरिन जिले के कारपाड खाड़ी, कोरामपल्लम खाड़ी, पषायलकायल नदीमुख, एवं पुन्नकायल नदीमुख में हो रहा हैं. साल भर में कम ज्वार के समय तटीय क्षेत्र की महिलाओं एवं पुरुषों के द्वारा विदोहन किया जाता है. सवेरे सीपियों को हाथों से पकड़ा जाता है और कवचों को थैलियों में संभरित किया जाता है. मध्यस्थों के ज़रिए ये सीपियां चूना एवं मुर्गी पालन उद्योगों के लिए बेची जाती हैं. टूटिकोरन जिले का औसत वार्षिक सीपी उत्पादन करीब 125 टन है. *पाफिया मलबारिका, मारसिया ओपिमा, मेरेट्रिक्स कास्टा* एवं *मेरेट्रिक्स मेरेट्रिक्स* जैसी सीपियों की प्रमुख प्रजातियां मात्स्यिकी को सहयोग दे रही हैं. विदोहित सीपियां चूना एवं मुर्गी पालन उद्योग में एवं इसका मांस चिंगटों के पिंजरा पालन एवं खाद्य के रूप में उपयोग किया जाता है.

कुलशेखरपट्टिनम टूटिकोरिन जिले के उत्तरी भाग में स्थित छोटा सा मत्स्यन गाँव है. इस गाँव में जीवाश्म द्विकपाटी का विदोहन साल भर की नियमित गतिविधि है. स्टील प्लेट की सहायता से कवचों की खुदाई एवं डाइविंग द्वारा विदोहन किया जाता है. हर एक नाव से अनुकूल मौसम में 5 टन कवचों एवं खराब मौसम में करीब 2.5 टन प्रतिदिन संकलित किया जाता है. रविवार को छोड़कर कवचों का विदोहन किया जाता है. *कारडिटा एस पी., ब्राकैड़ोंटस डेंटालियम, चालिम्स* एवं अन्य प्रजातियों के कवचों का उपयोग किया जाता है. 10 कि. ग्रा. कवच का मूल्य 15 रुपया है. इन कवचो को मुर्गियों के खाद्य एवं चूना कारखानों में ले जाते हैं और ज्यादात्तर चूना नामक्कल ले जाया जाता है जहां व्यापक रूप से मुर्गी पालन होता है.